ISSN 2231-4118

Śodha Pravāha

A Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. VII, Issue 3 July 2017

Chief Editor
Dr. S. K. Tiwari
Editor
Dr. S. B. Poddar

- **कामकाजी एवं गैरकामकाजी महिलाओं द्वारा प्रयुक्त पालन-पोषण की विधियों का बच्चों के बुद्धि एवं व्यक्तित्व पर प्रभाव** 405-406
  डॉ. भावना श्रीवास्तव, प्रवक्ता (गृह विज्ञान विभाग), पी.जी. कालेज, गाजीपुर
- **भारतीय लोक संगीतः एक दृष्टि** 407-409
  डॉ. गीता सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, वाद्य संगीत विभाग, आर्य महिला पी.जी. कॉलेज
- **संस्कृत भाषा एवं प्राचीन आर्य भाषा परिवार** 410-417
  डॉ. प्रमोद कुमार, प्राचार्य, राधाकृष्णन कॉलेज आफ एजुकेशन, शाहपुर, विक्रम, पटना
- **प्राचीन भारत में पशुपालन एवं धर्म** 418-420
  डॉ. दुष्यन्त सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, सकलडीहा पी.जी. कालेज सकलडीहा, चन्दौली
- **पुराणदृष्ट्या परशुरामोदयमहाकाव्यस्य परिशीलनम्** 421-423
  रामाशीष महतो, शोध छात्र (संस्कृत), का. सिं. द. सं. वि.वि. दरभंगा
- **किशोरावस्था में बालिकाओं का पोषण और स्वास्थ्य** 424-428
  पूजा पल्लवी, असि. प्रो. गृह विज्ञान, गया प्रसाद स्मारक राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश
- **भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत सहित्यिक में पर्यावरणीय संरक्षण की भूमिका** 429-432
  डॉ. राधाकान्त पाण्डेय, एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, ओबरा, सोनभद्र, उ.प्र.
- **प्रमुख दलित कहानियों में संघर्षशील चेतना का स्वर** 433-443
  श्याम सुन्दर राम, शोध छात्र, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
- **संगीतमनीषी पंडित निखील बैनर्जी** 444-445
  डॉ. प्रमिति चौधरी, एसोसिएट प्रोफेसर संगीत, प्रयाग महिला विद्यापीठ डिग्री कॉलेज प्रयागराज
- **गाँधी जी के लिए 'राजनीति' का सन्दर्भ** 446-450
  डॉ. जयकुमार मिश्रा, अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, राजा हरपाल सिंह पी.जी कालेज, सिंगरामऊ, जौनपुर (उ.प्र.)
- **उच्च शिक्षा के गुणवत्ता प्रबंधन हेतु प्रशासकों के उत्तरदायित्व का समीक्षात्मक अध्ययन** 451-453
  डॉ. शैलेन्द्र नाथ सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातंजिक अध्ययन विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनुपर
- **वर्तमान उच्च शिक्षा की चुनौतियां : एक समीक्षा** 454-458
  डॉ. उपेन्द्र कुमार सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातंजिक अध्ययन विभाग, प्रताप बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, प्रतापगढ़ सिटी, प्रतापगढ़
- **डॉ. राम मनोहर लोहिया राजनैतिक चिन्तन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन** 459-462
  डॉ. राजेश कुमार सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातंजिक अध्ययन विभाग, राष्ट्रीय पी. जी. कालेज, जमुहाई, जौनुपर

गाधी जी के लिए 'राजनीति' का सन्दर्भ

डॉ. जयकुमार मिश्रा *

महात्मा गॉधी जी के विचारों के विस्तृत परिप्रेक्ष्य में राज्य, राजनीति और समाज का केन्द्रीय महत्व है। इनका अध्ययन ज्ञान की आधुनिक विधाओं में 'राजनीति विज्ञान' के अन्तर्गत किया जाता है। इस विषय के जनक के रूप में समादृत अरस्तू ने 'राजनीति' को शासन के कार्यकलापों मे सहभागिता के रूप में देखा था और 'शासन' या 'राज्य' को सद्गुण एवं न्याय का एकमात्र स्रोत मानते हुए घोषित किया कि, जो 'राज्य' में नहीं रहता हो या जिसे 'राज्य' की आवश्यकता ही न हो वह या तो 'देवता' है या 'दानव'। इसलिए 'राज्य' को ही राजनीति विज्ञान का प्राणतत्व माना गया और बीसवी सदी में गार्नर ने कह दिया कि, राजनीति विज्ञान का आरंभ और अन्त दोनो 'राज्य' के साथ ही होता है। 19 वीं सदी में कार्ल मार्क्स और 20 वीं सदी में महात्मा गॉधी ने 'राज्य' की अपरिहार्यता को चुनौती दी, लेकिन दोनों के आधार अलग–अलग थे। मार्क्स ने राज्य को शोषण का यंत्र मानते हुए हिंसात्मक क्रान्ति द्वारा इसके उन्मूलन का समर्थन किया और गॉधी जी ने कहा कि यदि मनुष्यों को उनकी समस्त दुर्बलताओं से मुक्त कर दिया जाय तो राज्य की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाएगी, अर्थात मार्क्स के लिए 'राज्य' स्वयं में एक स्वार्थ पूर्ति के लिए बनाया गया 'यंत्र' है और गॉधी जी के लिए 'राज्य' केवल तभी तक आवश्यक है जब तक कि व्यक्तियों का समाज स्वयं को 'मनुष्यत्व' के साँचे में ढ़ाल न दे। मार्क्स ने 'राज्य' को समाप्त करने के लिए हिंसात्मक क्रान्ति और वर्ग संघर्ष का हथियार दिया तो गॉधी जी ने मनुष्यों को स्वये ही सम्पूर्ण हिंसा का परित्याग कर मानवीय मूल्यों को स्वयं में प्रतिष्ठित कर 'राज्य' रूपी सत्ता के अंत की बात कही।

'राजनीति' का परम्परागत अर्थ यह है कि, राजनीति सत्ता में सहभागिता प्राप्त करने के लिए व्यक्तियों के बीच होने वाली प्रतिस्पर्द्धा है, जिसमें जनता के द्वारा दिए गए मतों से सत्ता के नेतृत्व का निर्धारण होता है। इससे समाज में सहमति के आधार पर उचित नीतियों एवं निर्णयों का निर्धारण करने में मदद मिलती है। यहाँ बहुमत प्राप्त करके सत्ता प्राप्त करना ही मुख्य लक्ष्य बन जाता है, परिणामतः 'राज्य' सत्ता एवं विपक्ष के बीच राजनीतिक संघर्ष का मंच बनने लगता है। सत्ता पक्ष सत्ता में हमेशा बने रहने के लिए और विपक्ष सत्ता में आने के लिए किसी भी सीमा तक जाने के लिए तैयार हो जाते हैं अर्थात सत्ता साध्य और राजनीति साधन बन जाती है। महात्मा गॉधी के लिए राजनीतिक शक्ति साध्य न होकर समाज के लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है। राजनीतिक शक्ति का तात्पर्य राष्ट्रीय जीवन की क्षमताओं को जनप्रतिनिधियों के माध्यम से इस प्रकार नियंत्रित एवं संतुलित करना है कि, सभी व्यक्तियों को 'अभावों' से मुक्त किया जा सके। यदि सभी लोग स्व–नियंत्रित होने लगें और कोई भी न तो अन्याय करे और न ही दूसरों के अन्याय का शिकार हो, तो ऐसी दशा में गॉधी जी के अनुसार 'राजनीति' की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। जब सभी व्यक्ति अपनी समस्त मानवीय दुर्बलताओं एवं भैतिक अभावों से मुक्त हो जाएंगे तब उन्हें नियंत्रण में रखनें के लिए किसी भी प्रकार के बाहरी बाध्यकारी संस्थान की आवश्यकता ही नहीं रहेगी, पुलिस, कोर्ट–कचहरी, कानून आदि अप्रासंगिक हो जाएंगे अर्थात 'राज्य' भी नहीं रहेगा। गॉधी जी एक ऐसी स्थिति की संकल्पना करते हैं कि, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति एक कठोर आत्मानुशासन में जीवन बिताएगा। गॉधी जी के अनुसार 'राज्य' मनुष्य की अपूर्णताओं का प्रतीक है, इसकी आवश्यकता का मुख्य कारण ही यह है कि, मनुष्य अपने हितों या स्वार्थों के लिए परस्पर हिंसात्मक रूप से टकराते रहते हैं, इसी हिंसा जनित अराजकता से मुक्ति हेतु 'राज्य' की आवश्यकता होती है लेकिन प्रत्येक व्यक्ति जब 'पूर्ण मानव' के रूप में व्यवहार करने लगेगा और दूसरों के हितों को भी अपने हितों के ही समान वरेण्य मानने लगेगा तो पारस्परिक द्वेष या टकराव की सम्भावना ही समाप्त हो जाएगी, ऐसी दशा में गॉधी जी प्रश्न करते हैं कि, अब

---

* अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, राजा हरपाल सिंह पी.जी कालेज, सिंगरामऊ, जौनपुर (उ.प्र.)

'राज्य' की क्या आवश्यकता है? उसे तो अप्रासंगिक बन जाना होगा। लेकिन इसके लिए अहिंसा के तीनों रूपों– मन, वचन एवं कर्म– का प्रत्येक व्यक्ति द्वारा कठोर अनुपालन आवश्यक शर्त है। गॉधी जी के लिए 'मन' को हिंसा से सर्वथा मुक्त रखना मनुष्य बने रहने की प्रथम शर्त है क्योंकि कोई भी कार्य करने की प्रारम्भिक स्थिति मन के तैयार होने से शुरू होती है। मन के बाद वह कार्य करने के दूसरे स्तर 'वाचन या मौखिक' रूप में प्रस्फुटित होती है और सबसे अंत में वह शरीर के द्वारा 'कर्म' के रूप में सम्पन्न होती है। इस प्रकार यदि हिंसा को मन के स्तर पर पनपने ही न दिया जाय तो उसका क्रियान्ययन के स्तर पर पहुँचना असंभव हो जाएगा। इसीलिए गॉधी जी ने सबसे महत्वपूर्ण कार्य 'मन की हिंसा' पर नियंत्रण माना है। उनके लिए 'हिंसा' का एक व्यापक परिप्रेक्ष्य है, इसमें केवल 'जीवों की हत्या' ही नही आती वरन् क्रोध, लोभ, अहंकार, दुष्प्रवृत्ति और दुर्बलता जनित विकार आदि सभी आतें हैं। एक प्रकार से देखा जाय तो वे सभी दुर्गुण जो मनुष्य को 'वैष्णव जन' बनने से रोकें वह सभी हिंसा के ही चिन्ह हैं।

गॉधी जी धन के असीमित और असंयमित संचय करने की प्रवृत्ति को भी 'हिंसा' का ही एक रूप मानते हैं। उनका मत है कि, कोई भी व्यक्ति जो धन कमाता है उसके कमाने में केवल उसी का अकेले श्रम नहीं लगाा है, उसकी कमाई गयी सम्पत्ति में 'समाज का श्रम और सहमति' दोनो ही जुड़ी हुई है, अतः उसका प्रयोग विवेकसम्मत रूप से सबके हित में होना चाहिए। सम्पत्ति का ट्रस्टी के रूप में प्रयोग करने की प्रवृत्ति का प्रत्येक व्यक्ति में होना आवश्यक है। इन प्रवृत्तियों के साथ ही सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह जैसे मूल्यों को समाज में स्थापित करना राजनीति का प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए। गॉधी जी के लिए राजनीति समाज मे 'मूल्यों को स्थापित करने की कला' है और उनके लिए समाज का प्रत्येक संघर्ष 'मूल्यों का संघर्ष' है। चूँकि समाज में विभिन्न व्यक्ति 'पूर्णता' के भिन्न–भिन्न स्तरों पर हैं अतः सबके लिए मूल्यों की परिभाषा भी अलग–अलग ही है और यही मूल्यों को लेकर होने वाले संघर्ष का मूल कारण भी है। गॉधी जी का मानना था कि, यदि समाज के सभी व्यक्तियों में 'सद्मूल्यों' की एकसमान प्रतिष्ठा कर दी जाय तो मूल्यों के संघर्ष को समाप्त किया जा सकता है और मूल्यों का संघर्ष समाप्त हो जाने पर राजनीति से छुटकारा भी पाया जा सकता है क्योंकि राजनीति तभी तक रहेगी जब तक संघर्ष रहेगा। गॉधी जी के लिए राज्य आवश्यक है लेकिन यदि यह बहुत अच्छे से काम करना चाहे तो इसका ध्येय यह होना चाहिए कि, 'सामाजिक जीवन की परम्परा को कुछ इस प्रकार मानवता के सूत्रों में बाँध दिया जाय कि, इस समाज को अपने लिए किसी राजनीतिक प्रतिनिधि की आवश्यकता ही न रह जाय, अर्थात राज्य सत्ता की आवश्यकता इसलिए समाप्त हो जाय कि, प्रत्येक व्यक्ति किसी के मार्ग का रोड़ा न बनने की प्रतिज्ञा कर ले, प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों की आवश्यकताओं एवं दुःखों के प्रति संवेदनशील बन जाय और सभी प्रकार के संघर्ष समाप्त कर दिए जांय'–ऐसी दशा में राज्य सत्ता की आवश्यकता ही समाप्त हो जाएगी। ऐसा तभी होगा जब सभी व्यक्ति 'स्व–नियंत्रित' हो जायेंगे, तब जो सरकार होगी उसके पास आज की सरकारों की भाँति अत्यधिक कार्यों का बोझ नहीं होगा, वह तो 'न्यूनतम सरकार' होगी। गॉधी जी की यह विचारधारा पाश्चात्य जगत के अराजकतावादी विचारकों के राज्य सिद्धान्त से मिलती–जुलती है लेकिन दोनो में एक बड़ा अन्तर है। पाश्चात्य विद्वान 'राज्य' को व्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधक मानकर राज्य को न्यूनतम शक्ति एवं कार्य देते हैं जबकि गॉधी जी व्यक्ति का हृदय इस प्रकार बदलने की बात करते हैं कि उसे शासन या राज्य की आवश्यकता ही न पड़े। गॉधी जी मनुष्य को सर्वदा 'साध्य' मानकर चलते थे जबकि पश्चिमी विचारक मनुष्य को कभी 'साध्य' तो कभी 'साधन' मानकर सिद्धान्त देते रहते थे। गॉधी जी की दृष्टि स्पष्ट थी कि, व्यक्ति का चारित्रिक एवं व्यवहारगत उत्थान करके उसे वास्तव में एक 'मनुष्य' बनाने का लक्ष्य लेकर चला जाय और यदि सभी व्यक्तियों को इसी प्रकार ढाल दिया जाय तो उन्हें 'राज्य' की आवश्यकता बहुत कम पड़ेगी या नहीं पड़ेगी– और यही तो 'न्यूनतम राज्य' होगा।

व्यक्ति को चारित्रिक उत्थान की पराकाष्ठा पर ले जाने के लिए गॉधी जी धर्म को एक आवश्यक साधन के रूप में देखते हैं। उनके लिए धर्म नैतिकता एवं सदाचार का समुच्चय है, वह

व्यक्तिगत आचरण एवं सामाजिक व्यवहार का मापदंड है, यदि सभी लोग अपने–अपने धर्म का मौलिक रूप से पालन करें तो गॉधी जी का मत है कि, समाज को उसकी सभी प्रचलित बुराइयों से मुक्ति मिल जाएगी। राजनीति में धर्म का प्रयोग करके सत्ता प्राप्त करने या राजनीतिक लाभ के लिए धर्म का प्रयोग करने के गॉधी जी विरोधी थे, वे मानते थे कि, 'राजनीति का तो धर्म होना चाहिए लेकिन धर्म की राजनीति नहीं होनी चाहिए।' भारतीय परिस्थितियों को देखते हुए गॉधी जी ने कहा था कि, राजनीति ही उनका धर्म है, राजनीति के माध्यम से ही वे लोगों को गरीबी, दासता, अभाव एवं शोषण के मकड़जाल से बाहर निकाल सकते हैं। वे मानते थे कि, वे भोजन और पानी के बिना कुछ दिन तक रह सकते हैं लेकिन राजनीति से हटकर नहीं। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे घोर राजनीतिक थे, बल्कि राजनीति उनके लिए धर्म बन गयी थी– एक ऐसा धर्म जिसके द्वारा जनता का कल्याण किया जा सके। राजनीति उनके लिए जनता की सेवा थी जिसके द्वारा वे नर नही नारायण की सेवा कर रहे थे, इसलिए उन्होनें जनता को ही 'जनार्दन' कहा, उन्होनें गरीबी से जूझते हेए लोगों को भी 'दरिद्र नारायण' कहकर समादृत किया। उनका मत था कि, ईश्वर को हमने नहीं देखा है लेकिन यदि उसकी सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में समादृत मनुष्यों की सेवा करते हैं तो यह एक प्रकार से ईश्वर की ही सेवा होगी और राजनीति गॉधी जी को यही सेवा का अवसर दे रही थी। जहाँ सेवा राजनीति का लक्ष्य हो वहाँ सत्ता का लोभ राजनीति को पथभ्रष्ट नहीं कर सकता– गॉधी जी ऐसी ही राजनीति के पोषक थे, उनकी राजनीति का तो यही लक्ष्य था कि, 'प्रत्येक व्यक्ति के आँख का आँसू पोछ लिया जाय' और यदि राजनीति यह नहीं कर रही हो तो ऐसी राजनीति हमें छोड़ देनी चाहिए। गॉधी जी की दृष्टि मे राजनीति का लक्ष्य समाज की परम्परागत मूल्य संरचना से पूर्व मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करना होना चाहिए। सामूहिक संवेदनशीलता को व्यक्तिगत इच्छा या भावना से ऊपर देखना होगा और समाज की सामूहिक चेतना के अंग के रूप में स्वयं की चेतना का निर्माण करना होगा। यद्यपि गॉधी जी मानते थे कि, कभी कोई ऐसी दशा आ सकती है कि जिसमें 'एकला चलो' ही श्रेयष्कर होगा लेकिन वह उन्हें 'अंतिम विकल्प' के रूप में ही स्वीकार्य है।

गॉधी जी सत्ता के दो प्रकार मानते थे, प्रथम, सत्ता वह है जो लोगों को दण्ड का भय दिखाकर प्राप्त की जाती है और द्वितीय, सत्ता वह है जो प्रेम, करुणा एवं दया दिखाकर प्राप्त की जाती है। उनका मत था कि, सत्ता का जो द्वितीय रूप है वह प्रथम की तुलना में हजारों गुना अधिक प्रभावशाली एवं स्थायी होता है।[1] गॉधी जी सत्ता के एक या कुछ ही हाथों में केन्द्रीकृत होने का भी विरोध करते थे क्योंकि यह जनता की शक्ति को ठुकराकर 'तानाशाही' की ओर ले जाता है, जिससे शोषण, असमानता एवं सामाजिक भेदभाव को बढ़ावा मिलता है, इसलिए गॉधी जी सत्ता को जनता के हाथ में देना चाहते हैं जिससे कि वास्तविक अर्थों में 'लोकतंत्र.' स्थापित हो सके। वे सत्ता का लक्ष्य 'सर्वोदय' मानते हैं जहाँ सत्ता राजनीतिक संघर्ष का आधार न होकर 'सबके उत्थान का सामूहिक प्रयास' बन जाती है। सर्वोदय की अवधारणा कार्ल मार्क्स के 'वर्ग संघर्ष' की अवधारणा पर एक प्रबल प्रहार है जो कहता है कि धनी और निर्धन के बीच कोई सामंजस्य हो ही नहीं सकता, इस समस्या का समाधान केवल तभी होगा जब 'हिंसात्मक क्रान्ति' के द्वारा अमीरों की सम्पत्ति हड़प ली जाय और उनका समर्थन कर रही संस्था 'राज्य' को समाप्त कर दिया जाय। जबकि गॉधी जी यह कहते हैं कि, राजनीति द्वारा अमीरों या पूँजीपतियों का दमन करने की कोई आवश्यकता नहीं है, वरन आवश्यकता उनका हृदय परिवर्तन करने की है। उनके हृदय में पल रहे शोषण, लालच और दमन के भावों का परिवर्तन कर उन्हें गरीबों के कष्टों एवं दुःखों के प्रति संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है और गरीबों के हृदय में अमीर पूँजीपतियों के विरूद्ध पल रहे रोष एवं हिंसा के भावों का परिवर्तन करना भी आवश्यक है, राजनीति ऐसे ही सकारात्मक और अहिंसात्मक परिवर्तनों के लिए होना चाहिए – यही वह बिन्दु है जो 'सर्वोदय' को प्रासंगिक बना देता है। गॉधी जी के लिए वह राजनीति त्याज्य है जो 'सर्वोदय' की भावना को स्वीकार न करे।

गॉधी जी के लिए राजनीति 'सत्य' को समाज में स्थापित करने का प्रयास है, वे कहते हैं कि, ईश्वर सत्य है या नहीं वह नहीं जानते, उनके लिए तो 'सत्य ही ईश्वर है'। राजनीति भी सत्य की

खोज या सत्य का अनुसंधान है। उन्होनें तो राजनीति में सत्य का प्रयोग किया और अपनी आत्मकथा का ही नाम रखा– 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग'। गॉधी जी की राजनीति 'सत्य तक पहुँचने का एक प्रयास है', अर्थात उनकी राजनीति 'सत्य' को लक्ष्य मानकर चलती है और इस लक्ष्य प्राप्ति में जो भी बाधाएं आती हैं उन्हें हटाने के लिए 'सत्याग्रह' भी करती है। गॉधी जी चाहते थे कि राजनीति में केवल वे ही लोग आएं जो निजी स्वार्थों का परित्याग कर वैश्विक मूल्यों की समाज में प्रतिष्ठा करना चाहते हैं। गॉधी जी राजनीति का लक्ष्य 'स्वराज्य' घोषित करते हैं जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को लगे कि वह 'साधन' न होकर 'साध्य' है। 'स्वराज्य' में गरीबी, बेरोजगारी, शोषण, दासता, हिंसा, बीमारी आदि का कोई स्थान नहीं होगा क्योंकि शासन इन सभी दुर्बलताओं को दूर करने में सक्षम होगा। स्वराज्य तभी आएगा जब प्रत्येक व्यक्ति नीति–निर्माण एवं निर्णय–निर्माण में सहभागी होगा और शासन जन–समस्याओं के प्रति उच्च स्तर की संवदनशीलता दिखाएगा। गॉधी जी राजनीतिक व्यवस्था का संचालन पंचायतों के माध्यम से करना चाहते थे, पंचायतों को इस प्रकार से आत्मनिर्भर एवं अधिकार सम्पन्न बनाया जाएगा कि, वे एक 'लघु गणतंत्र' के रूप में प्रतिष्ठित हो सकें।

गॉधी जी द्वारा राजनीति के क्षेत्र में प्रयोग किए गए राजनीतिक साधनों जैसे धरना, सत्याग्रह, आमरण अनशन आदि की वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर प्रश्न उठाए जाते रहे हैं। 2010 के बाद अरब–जगत में होने वाली क्रान्तियों (जिसमें लगभग 17 देश लोकतांत्रिक एवं अहिंसक जनान्दोलनों से प्रभावित हुए थे) में गॉधी जी द्वारा अपनाए गए साधनों को बड़े ही सशक्त एवं सजीव तरीके से प्रयोग कर सफलता प्राप्त की गयी है और इन साधनों की प्रासंगिकता को स्थापित किया है। जिस प्रकार महात्मा गॉधी अपने राजनीतिक संघर्षों के बीच–बीच मे सामाजिक सुधार और आर्थिक विकास के मुद्दे उठाते थे, वैसा ही अरब–जगत में भी किया गया। यहाँ एक ओर शासन में लम्बे समय से काबिज शासकों/तानाशाहों को हटाने के लिए और जनता को राजनीतिक प्रतिनिधित्व देने के लिए आन्दोलन किया गया तो वहीं दूसरी ओर अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, कुपोषण, असमान आर्थिक विकास और सामाजिक भेदभाव जैसे मूलभूत मुद्दे भी उठाए गए। ये आन्दोलन इतने सशक्त थे कि, ट्यूनीशिया में राष्ट्रपति बेन अली को पद छोड़ना पड़ा, अल्जीरिया में 19 वर्ष पुराना आपातकाल वापस ले लिया गया, जार्डन में सुल्तान अब्दुल्ला को हटा दिया गया, सुडान में राष्ट्रपति बशीर ने जनता के विरोध प्रदर्शनों को देखते हुए कह दिया कि, वे शांत हो जांय क्योंकि वे अब पुनः चुनाव नहीं लड़ेंगे, यमन में सत्तारूढ़ दल के सांसदों ने त्यागपत्र दे दिया, मिस्र के राष्ट्रपति होस्नी मुबारक को पद छोड़कर जाना पड़ा, सीरिया में सम्पूर्ण सरकार को पद त्याग देने के लिए बाध्य होना पड़ा और लीबिया में कर्नल गद्दाफी के शासन का अन्त ही हो गया। इन सारे क्रान्तिकारी परिवर्तनों का सूत्रपात अहिंसक आन्दोलनों से ही हुआ था, इसमें सूचना प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण भूमिका थी, लोगों ने सोशल वेबसाइट्स–ट्वीटर, फेसबुक, व्हाट्सएप, यू टयूब आदि– के सहारे लोगों को एकजुट किया, अरब क्रान्ति के समय लोगों नें सरकारों के विरूद्ध धरना दिया, प्रदर्शन किया, समर्थकों की भारी भीड़ के साथ लोगों नें लम्बी–लम्बी पदयात्राएं (मार्च) की, वे प्रमुख चौराहों पर रात–रात भर जागकर भाषण देते या सुनते रहे, सरकारों द्वारा जनता के दमन या अत्याचार के बड़े–बड़े पोस्टरों की प्रदर्शनी लगायी गयी, शासकों एव जनता के सम्बन्धों को लेकर अनेक व्यंग्य–चित्र बनाए गए, कविताएं लिखकर उनको चौराहो पर पढ़ा गया, गैर सरकारी संगठनों का सहयोग लिया गया, सामूहिक उपवास के कार्यक्रम आयोजित किये गए, सरकार को कर देने से इनकार कर दिया गया और बिना किसी हिंसा के सरकारी मशीनरी को जाम कर देने का प्रयास किया गया। इन सारे जनान्दोलनों और राजनीतिक दबावों का परिणाम यह हुआ कि, 'स्वराज्य' को जनता ने स्वयं अपने सामूहिक प्रयासों से राजनीतिक चिन्तन के केन्द्रबिन्दु में ला दिया। इन आन्दोलनों की सबसे बड़ी बात यह थी कि, यहाँ लोकतंत्र की माँग समाज के निचले शोषित–वंचित वर्ग से आयी, जो अब 'जागृत' हो चुका था।[2] वस्तुतः अरब–जगत के शासक जनता से वैसे ही कटे हुए थे जैसे अंग्रेज शासक भारतीय जनता से कटे हुए थे। गॉधी जी इस बात को समझते थे कि, राज्य एवं समाज के बीच एक संवेदनशील समन्वय एवं सन्तुलन बने रहना चाहिए और

राजनीति ही यह काम कर सकती है लेकिन जब राजनीति अपने इस लक्ष्य से भटक जाय तो समाज उत्श्रृंखल और राज्य तानाशाह बन जाता है।

अरब–जगत के जनान्दोलनों के अतिरिक्त आज पूरे विश्व में अनेक ऐसे आन्दोलन चल रहे हैं जिनके पीछे गॉधी जी के विचारों का प्रभाव है, जैसे वैश्वीकरण के विरुद्ध या इससे क्षति उठाने वाले देशों में 'विश्व आर्थिक संगठन' के समानांतर बनाए गए एक सशक्त संगठन 'विश्व सामाजिक संगठन' ने आज एक प्रभावकारी स्थिति प्राप्त कर ली है, आज पूरे विश्व में जगह–जगह परमाणु उर्जा प्रतिष्ठानों के विरूद्ध होने वाले शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन भी गॉधी जी के राजनीतिक साधनों से ही हो रहे हैं, अफ्रीका में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा जल, जंगज, जमीन एवं खनिज–पदार्थों के अनियंत्रित दोहन के विरुद्ध अनेक शांतिपूर्ण आन्दोलन चल रहे हैं, पर्यावरण संरक्षण से जुड़े अनेक आन्दोलन आज पूरे विश्व में गॉधीवादी साधनों से चलाए जा रहे हैं और सफल भी हैं।[3] वास्तव में राजनीतिक साधनों की गॉधीवादी अवधारणा आज भी विश्व में अनेक स्थानों पर सफलतापूर्वक प्रयोग में लायी जा रही है। इसका प्रयोग भी निरंतर बढता जा रहा है और यह विश्वास भी बढ़ रहा है कि, यही मानवता को संकटों से बचाने में सक्षम है।

सन्दर्भ :

1. महात्मा गॉधी, 'यंग इण्डिया', 8 जनवरी, 1925, पृ0 25.
2. जर्नल ऑफ कम्यूनिस्ट स्टडीज एण्ड ट्रांजिशन पॉलिटिक्स, वॉल्युम–25, 2009, इश्यू 2–3, 'रीथिकिंग द कलर्ड रिवोल्यूशन'
3. फ्रॉम डिक्टेटरशिप टु डेमोक्रेसी : ए कॉन्सेप्चुअल फ्रेमवर्क फार लिबरेशन, द अलबर्ट आइन्स्टीन इन्स्टीट्यूशन, 2003.

***